# 'बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचें'

बाल साहित्य 18वी सदी में नही शुरू हुआ, लोरी के रूप में मां के मुंह से इसका उदय हुआ। बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचना और आगे बढ़ना चाहिए। यह बातें ओड़िया विद्वान दाश बेनहुर ने कही। शुक्रवार को साहित्य अकैडमी दिल्ली के दो दिवसीय आयोजन बाल साहिती के दूसरे दिन हिंदी संस्थान के निराला सभागार में आयोजन हुआ। इस दौरान सत्रों में संगोष्ठी, काव्य समारोह के संग पुरस्कृत लेखकों ने अनुभव साझा किए। अजय कुमार शर्मा के संचालन में हुई संगोष्ठी में बांग्ला रचनाकार उल्लास मलिक ने बांग्ला बाल साहित्य के लेखन का हवाला देते हुए उसके इतिहास को सामने रखा। स्थानीय साहित्यकार जाकिर अली रजनीश ने कहा कि विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो बहुत सी बाल कहानियों ने नुकसान अधिक पहुंचाया है। गुजराती लेखिका गिरा पिनाकिन भट्ट ने कहा कि मेरी पुरस्कृत पुस्तक 'हंसती हवेली' में बच्चों की चहक, इस उम्र के तेवर, खनक, चमक आदि को सजीव किया है।

साहित्य अकैडमी दिल्ली का दो दिवसीय आयोजन

## बच्चों को स्वतंत्रता देनी जरूरी

चर्चा के दौरान कन्नड़ लेखक कृष्णमूर्ति बिलगेरे ने बच्चों की स्वतंत्रता पर जोर दिया। कानपुर के उर्दू विद्वान शोएब निजाम ने रचना 'छुट्टी का मौसम' में बच्चों की मस्ती का जिक्र किया। बाल साहिती काव्य समारोह में लता हिरानी ने अपनी गुजराती कविता हिंदी अनुवाद 'बात चली है गांव गांव में, चमक चांद पर जायेगी...', लखनऊ के सुरेंद्र विक्रम ने बाल हिंदी रचना 'पापा कहते बनो डाक्टर, मां कहती इंजीनियर...', मणिपुरी कविता पढ़ने वाले खोइसनम मंगोल ने दो लघु कविताएं पढ़ीं। समापन करते हुए अकैडमी के उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि आज इक्कीसवीं सदी में भी बच्चों को सहजता आकर्षित करती है। इस दौरान कई साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।